शोध सारांश

भदंत सदानंद महास्थविर का जीवन वृत्त एवं उनका योगदान

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध "भदंत सदानंद महास्थविर का जीवन वृत्त एवं उनका योगदान" भदंत सदानंद महास्थविर के त्यागमय आदर्शपूर्ण भिक्षु जीवन एवं उनके द्वारा बौद्ध धम्म के लिए किए गए योगदान की विस्तृत विवेचना करता है। इस शोध का उद्देश्य भदंत सदानंद महास्थविर के संघर्षशील, नैतिक, त्यागमय, समाजसेवी, भिक्षु जीवन को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना है। उनके आदर्श भिक्षु जीवन एवं मूल्यवान विचारों की समाज एवं भिक्षु संघ के लिए अत्यंत उपयोगिता है। उनके जीवन एवं उनके द्वारा बौद्ध धम्म के लिए किए गए योगदान पर आधारित यह लघु शोध-प्रबंध बौद्ध समाज एवं बौद्ध भिक्षु संघ के लिए मार्गदर्शन का कार्य कर सकता है।

इस लघु शोध-प्रबंध में तीन अध्याय हैं जो क्रमश: भदंत सदानंद महास्थविर का जीवन परिचय एवं संघर्ष, भदंत सदानंद महास्थविर का बौद्ध साहित्य में योगदान, और भदंत सदानंद महास्थविर के सामाजिक एवं धार्मिक कार्य हैं।

इस लघु शोध-प्रबंध की शुरुआत भूमिका द्वारा की गयी है जिसमें भगवान बुद्ध द्वारा बताई गयी भिक्षु की अवधारणा की चर्चा करके अतीत से वर्तमान तक बौद्ध भिक्षु संघ एवं बौद्ध धम्म प्रचारकों के कार्यों की संक्षिप्त विवेचना की गयी है। पहले अध्याय में भदंत सदानंद महास्थविर का संक्षिप्त जीवन परिचय देकर उनके जीवन की मुख्य घटनाओं का विश्लेषण किया गया है। दूसरे अध्याय में उनके विश्लेषणात्मक बौद्ध साहित्य के शोधपूर्ण अध्ययन, गहन चिंतन, धम्ममय जीवन द्वारा लिखे गए सामाजिक एवं धार्मिक उद्देश्य के लेखन को समाज के बीच एक उदाहरण के स्वरूप में प्रस्तुत करने का वस्तुनिष्ठतापूर्ण प्रयास किया गया है। तीसरे अध्याय में उनके द्वारा किए गए सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों का शोध विधियों द्वारा विश्लेषण किया गया है जिसमें प्रमुखता से एतिहासिक 'धम्मचक्र नगर' वर्तमान केलझर, वर्धा में स्थित 'धम्मराजिक महाविहार' धम्म प्रचार-प्रसार केंद्र उनके द्वारा विकसित किया गया है। उन्होंने अखिल भारतीय भिक्षु संघ के लिए एक अनुशासक के रूप में प्रेरणादायक कार्य कर उसे विकसित किया है। इन सभी महत्वपूर्ण बिन्दुओं को इस लघु शोध-प्रबंध में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक शोध विधियों द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। बाबा साहब अम्बेडकर के बौद्ध धम्म ग्रहण करने के बाद भारत में जो भिक्षु बने उनमें भदंत सदानंद का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है। वे निरंतर 52

वर्ष से भिक्षु जीवन के माध्यम से भारत में बौद्ध संस्कृति की स्थापना के लिए प्रयासरत है। बौद्ध साहित्य की अनेक रचनाएँ करके उन्होंने बौद्ध समाज में परिवर्तन के लिए कार्य किया है। उनका जीवन त्याग एवं सेवाभाव से परिपूर्ण है। 52 वर्ष से भिक्षु जीवन के उन्हें अनुभव है। उनके विचार समाज परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उनका भिक्षु जीवन बौद्ध भिक्षु संघ के लिए आदर्श है। उन्होंने भारत में बौद्ध संस्कृति की स्थापना लिए अपना समग्र जीवन अर्पित किया है। निरंतर सक्रिय रहकर वे अभी भी 76 वर्ष की आयु में समाज में कार्यरत है। भदंत सदानंद एक कुशल बौद्ध धम्म प्रचारक ही नहीं अपितु एक कुशल समाज सेवक भी है। अपने गरीब एवं अशिक्षित समाज में उन्होंने बौद्ध धम्म के द्वारा निरंतर आशा का संचार किया है। 52 वर्ष के धम्म जीवन में महाराष्ट्र में बौद्ध उपासकों को बौद्ध विहार बनाने के लिए उन्होंने हमेशा प्रेरणा दी है जिस कारण आज महाराष्ट्र में सैकड़ों बौद्ध विहारों की निर्मिति हो चुकी हैं जिनके द्वारा बौद्ध धम्म के प्रचार-प्रसार का कार्य शुरू है जो उनकी प्रेरणा का प्रतिफल है। सन 2000 से अखिल भारतीय भिक्षु संघ के संघानुशासक बनकर वे भिक्षु संघ का मार्गदर्शन एवं प्रतिनिधित्व कर रहे है।

यह लघु शोध-प्रबंध वर्तमान में बौद्ध समाज में व्याप्त अनैतिकता, बौद्ध धम्म के विपरित किए जाने वाले कार्यों की समस्याओं पर एक समाधान सिद्ध हो सकता है। यह लघु शोध-प्रबंध नैतिक सदाचार, एक आदर्श भिक्षु और बौद्ध धम्म प्रचार-प्रसार के चिंतन का एक दस्तावेज़ है। इस लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण करने के लिए मुख्यतया साक्षात्कार एवं पुस्तकालय शोध प्रविधियों का प्रयोग करके प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण एवं विवेचन किया गया हैं। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में भदंत सदानंद के जीवन एवं उनके द्वारा किए गए बौद्ध धम्म के मुख्य योगदान की घटनाओं को उनसे प्रत्यक्ष साक्षात्कार लेकर वर्णनात्मक पद्धति द्वारा प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार यह शोध-प्रबंध बौद्ध समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

Research Summary

The Biography and Contribution of Bhadant Sadanand Mahasthavira

Present dissertation "The biography and contribution of Bhadant Sadanand Mahasthavira" throws light on his renounced and great sacrificed life as a Buddhist monk. The main objective of this research is to present his struggled, ethical, and the social services as a Buddhist monk among the Buddhist society.

This dissertation becomes very helpful and relevant before the monk and the Buddhist society by representing his (Bhadant Sadanand Mahasthavira's) life and his work for the upliftment of the Dhamma.

In this dissertation there were three chapters under the content of the introduction of Bhadant Sadanand Mahasthavira's life and struggle, the contribution of Bhadant Sadanand Mahasthavira in the field of Buddhist literarture, and the social and the religious life works of Bhadant Sadanand.

This dissertation starts with the introduction of a Buddhist monk preached by the Buddha. It discussed about the brief present and from history of works done by the eminent Buddhist scholars and the monks.

In the first chapter, it is given the brief introduction and the important incidents of the life of Bhadant Sadanand Mahasthavir. In the second chapter, it is written about descriptive research studies of his Buddhist literature, deep meditation and dhamma's life. It is written with the aims of presenting his social and religious objectives before the common people. In the third chapter his works in his social life and the religious works were written with the help of research methodology in which historical important place "Dhamma chakra Nagar" of present Keljhar,

wardha he built “Dhammrajik Mahavihara” (a monastery) Dhamma center for the propagation of Dhamma.

For all India Bhikkhu sangha he works as a disciplinary for its development and all these points were presented by the method of research methodology of the descriptive and analytical research.

This research throws light on the life time works of Bhadant Sadanand. He is one of the most important monk who took the teachings of Buddhism along with B.r. Ambedkar and from 52 years he is serving the Buddhist society with his teachings, guidelines, literature and the sermons. At the age of 76 he is a great fond for the Buddhist society. He made a great contribution for the upliftment of the all India Bhikkhu Sangha with his guidelines. This research work was completed by analysis his books. Some of the data were taken about his life and important events of his life by his own interview. This dissertation can be helpful for the Buddhist society.